Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 8 | AUGUST 2024

मनीषा कुलक्षेष्ठ की कहानियों में नारी जीवन

ममता [1] | प्रो. बबीता काजल [2]

[1] शोधार्थी, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय बीकानेर (राज.).

[2] आचार्य, हिन्दी विभाग चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय श्रीगंगानगर, राजस्थान.

ABSTRACT:

इक्कीसवीं सदी की कहानीकार मनीषा कुलश्रेष्ठ ने अपने लेखन से जिन उंचाईयों को छुआ है वह उनके लिए सर्वथा अनुकूल है । मानवीय संवेदनाओं को साहित्य का विषय बनाकर पाठक में उत्सुकता जगाने वाली लेखिका मनीषा जी ने कम ही समय में साहित्याकाश के जिस शिखर को छुआ है वहां तक जाना ही बेहद मुश्किल है। उनकी रचनाओं में विषयों की विविधता दिखाई देती है । वर्ण, धर्म, लिंग, वर्ग आदि से बाहर उनकी कहानियाँ मनुष्यता और प्रगतिशीलता के पक्ष में खड़ी होती है तथा उनकी रचनाओं में समाज की यथार्थता का पुट मिलता है । मनीषा कुलश्रेष्ठ की कृतियों में एक ओर जहाँ आधुनिक मूल्यों की प्रतिष्ठा है तो वहीं दूसरी ओर रूढ़ियों का बहिष्कार भी है । दाम्पत्य-जीवन, पारिवारिक-जीवन आदि के उत्कृष्ट चित्रण के साथ ही साथ लेखिका अपनी रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक, साम्प्रदायिक, नारी-चेतना जैसे विषयों को भी बखूबी चित्रित करती हैं । इनकी कहानियों में विचारधारा और प्रतिबद्धता इस प्रकार विन्यस्त है कि कहानी का विन्यास विचारधारा और प्रतिबद्धता की आभा से ग्रस्त नहीं होता ।

KEYWORDS:

नारी जीवन, मनीषा कुलश्रेष्ठ, नारीवाद, दामपत्य जीवन, पारिवारिक जीवन, संघर्ष, महिला जीवन, कथा साहित्य, अबला, वर्ण, धर्म लिंग ।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
21st August 2024	24th August 2024

परिचय:

कथा साहित्य में महिला जीवन की समस्याओं के जीवन चित्रण के साथ-साथ नारीवाद को भी सैद्धान्तिक रूप प्रदान में सफल हुई । समकालीन साहित्य वैविध्य और विस्तृत है कथा साहित्य का फलक बहुत ही विस्तृत है इसमें अबला समझी जाने वाली नारी शिक्षा और जागरण के कारण अपने अधिकारों के प्रति सतर्क हुई । वह पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने की कोशिश में कामयाब हुई ।

महिला कहानी लेखन पाँच पीढ़ियों का रचना क्षेत्र हैं पहली पीढी में मन्नू भण्डारी, उषा प्रियवंदा, शिवानी, शशिप्रभा शास्त्री और कृष्णा सोवती हैं और दूसरी पीढी में चित्रा मुदगल, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, मणिका मोहिनी और निरूपमा सोवती हैं । राजी सेठ, मंजुल भगत, नासिरा शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा, मेहरूनिसा परवेज जैसे कहानीकारों की तीसरी पीढ़ी है और अल्पना मिश्र, अलका सरावगी, मनीषा कुलश्रेष्ठ, गीताजंली श्री, सिम्मी हर्षिता, मधु कांकरिया आदि युवा लेखिकाओं की चौथी पीढी है । शमिला बोहरा जालान, महुआ माझी जी, कविता, नीलाक्षी सिंह लेखिकाओं की पाँचवी पीढ़ी है ।

मनीषा कुलश्रेष्ठ की अपनी कहानी में आधुनिक युग की विषमता के स्वरूप के रूप में वद्धाश्रम का उल्लेख भी किया गया है । भविष्य में युवा हमें वृद्धाश्रम के अलावा क्या देंगे? महास्वार्थी है यह पीढ़ी। पहले कभी हमने भारत में वद्धाश्रमों का नाम तक नहीं सुना था? हमारी सास तो आखिर तक हमारी छाती, मेरा मतलब हमारे साथ रहीं। इनकी कहानियों में नारी के सामाजिक यथार्थ की बात करता है। मनीषा कुलश्रेष्ठ का साहित्य आज के युग के धार्मिक बोध से सम्पृक्त है । मनीषा ने यथार्थ के धरातल पर जो सृजन किया है उसमें नारी की दशा को यथार्थ से सीधा जोड़ा जा सकता है । सामान्यतः कोई भी किसी असहाय, अकेली स्त्री पर अत्याचार करेगा, तो विवश हो अपने आप को गुनहागार मान ही लेगी ।

इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के कहानीकार उसी गतिशील युग एवं भूमण्डलीकरण के वातावरण के प्रभाव में पले हैं तथा बड़े हुए हैं जिसमें सब कुछ परिवर्तित होता नजर आ रहा है । इस परिवर्तन को हम चाहे राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक रूपों में भी देख सकते है । इन सभी का विस्तृत चित्रण हमें इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के कहानीकारों द्वारा रचित कहानियों में स्पष्ट तौर पर देखने को मिलता है । इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक का कहानी साहित्य, आज के जीवन की कठिन वास्तविकता को व्यक्त करते हुए मनुष्य की अस्मिता तथा अस्तित्व के साथ जुड़ चुका है । आज अत्यधिक पूंजीवाद के कारण हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ चुका है । उसने हमारे जीवन को इतना कठिन तथा संघर्षमय बना दिया है कि मानव होने के सामने प्रश्न खड़ा दिखाई दे रहा है । अनेक प्रकार के दबाव वैश्विक पूंजीगत तथा बाजार के चलते संकट खड़े कर रहे हैं । यहाँ नैतिक आदर्श, सभी मूल्य व चरित्र सभी कुछ निष्फल प्रतीत हो रहे हैं । रिश्ते छीजते हुए समाप्ति की ओर बढ़ चले हैं। इन्सान सहसा एकाकी पड़ता नजर आ रहा है । उसका अपना जो कुछ था और निजी था उससे पृथक कर दिया है । जिससे उसकी संवेदना व पीड़ा बढ़ती जा रही है । उसे अपनी मूल जडों से कट जाने की पीड़ा अलग सता रही है । इस बदली हुई जीवन पद्धति और मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करने की अवस्था में मर्यादाओं को आत्मसात कर विषयगत नवीनीकरण के कारण नये विकसित होते हुए मूल्यों को अपनाते हुए 21वीं सदी के प्रथम दशक के कहानीकार अत्यधिक उज्जवलित युगबोध का परिचय देते प्रतीत होते हैं । इस साहित्य ने युग के खंडित जीवन मूल्यों की ओर विघटित मानवीय रिश्तों को पूरी सत्यता के साथ प्रकट किया है । इस साहित्य ने समस्त भारत के असफल अर्थतंत्र और राजनीति के ताने बाने से राजनैतिक छल प्रपंच को बड़ी गहराई से उकेर कर स्वस्थ युगबोधी होने का परिचय दिया है । अब इतना तो जरूर कहना पड़ेगा कि 21वीं सदी के प्रथम दशक के कहानीकरों की कहानियों में कोई उतार-चढ़ाव और वाद-विवाद और आन्दोलन जैसे नारे की कोई चीज नहीं है । यह साहित्य बिना किसी उपद्रव के बेहतरी की तलाश कर रहा है । अपने समय और समाज के हस्तक्षेप द्वारा एक श्रेष्ठ दायित्व का निर्वहन किया जा रहा है । आज विमर्शों का दौर चल पड़ा है । इसे युग तो हम नहीं कह सकते लेकिन सब प्रकार के विमर्श दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आत्म संरक्षक विमर्श, फांसीवादी विमर्श आदि। सूची और भी बड़ी बनाई जा सकती है । 21वीं सदी के प्रथम दशक के कहानीकारों का विमर्श बोध, युगबोध का ही हिस्सा कहा जा सकता है । गीताजंली श्री, अलका, मधु जया, जादवानी, लवलीन, संजीव, गीताश्री, राकेश, नीलाक्षी, रमणिका गुप्ता, मनीषा, कुलश्रेष्ठ आदि इस सदी के जाने-माने नाम हैं । इसी तरह दलित-विमर्श सम्बंधी युगबोध को भी 21वीं सदी के कहानीकारों ने बड़ी भारी जिम्मेदारी से अभिव्यक्त किया है । ओमप्रकाश वाल्मीकि, श्योराज

सिंह बैचेन, मोहन नैमिशराय, कवंल भारती, संजय खाती, जयप्रकाश कर्दम, सूरजपाल आदि ने दलित विमर्श से सम्बन्धित युगबोध को स्वर दिया है। आदिवासी बोध को भी संजीव, भाल चन्द्र जोशी, पंकज विष्ठ कैलाश, ललित शाह आदि कहानियाँ आदिवासी समाज द्वारा किये जा रहे संघर्षो को बडी ही स्पष्ट और बेबाकी से उजागर किया है। 21वीं सदी के प्रथम दशक के कहानी साहित्य की दृष्टि समाज के प्रत्येक वर्ग पर गई है। उस हिस्से की 3 डी पिक्चर पाठकों के सामने प्रस्तुत की गई है । इक्कीसवीं सदी के जीवन पर राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भो, वैश्वीकरण, उदारीकरण, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी आदि प्रभाव कई दृष्टि से बदला नजर आ रहा है। इस बढ़ते हुए प्रभाव को पहचानना और उनके बीच से जीवन का मार्ग तलाशना 21वीं सदी के प्रथम दशक के कहानीकारों की जिम्मेदारी है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ की रचनाओं में विषयों की विविधता दिखाई देती है। वर्ण, धर्म, लिंग, वर्ग आदि से बाहर उनकी कहानियाँ मनुष्यता और प्रगतिशीलता के पक्ष में खड़ी होती है तथा उनकी रचनाओं में समाज की यथार्थता का पुट मिलता है। मनीषा कुलश्रेष्ठ की कृतियों में एक ओर जहाँ आधुनिक मूल्यों की प्रतिष्ठा है तो वहीं दूसरी ओर रूढ़ियों का बहिष्कार भी है। दाम्पत्य-जीवन, पारिवारिक-जीवन आदि के उत्कृष्ट चित्रण के साथ ही साथ लेखिका अपनी रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक, साम्प्रदायिक, नारी-चेतना जैसे विषयों को भी बखूबी चित्रित करती हैं। शिव स्वरूप सहाय पारिवारिक सम्बन्ध के विषय में कहते हैं कि ''पारिवारिक सम्बन्धों से अभिप्राय है जिसमें स्त्री-पुरूष का यौन सम्बन्ध पर्याप्त निश्चित होता है और इनका साथ इतने समय तक होता है जिसमें संतान उत्पन्न हो जाए और उसका पालन पोषण भी हो जाए।''[1]

एक सजग रचनाकार के रूप में मनीषा कुलश्रेष्ठ समय, समाज और उसके विद्रूपों तथा चुनौतियों के प्रति भी सचेत हैं। उनकी कहानियाँ स्त्री अस्तित्व के पक्ष में हमेशा खड़ी हैं और उसके सामाजिक शोषण की भयावह परिणतियों पर भी संवेदंनशील हैं । 'लापता पीली तितली' कहानी में बचपन मे हुए यौन-शोषण की शिकार युवती की मानसिक पीड़ा का मनोवैज्ञानिक चित्रण है, जो आज के समय का भी अमानवीय सच है। सभ्य कहे जाने वाले समाज की कुत्सित मानसिकता और रिश्तेदारों, पड़ोसियों या फिर परिचितों के द्वारा यौन हिंसा से पीड़ित अबोध बच्चियों और महिलाओं को कभी उचित न्याय नहीं मिल पाता। इस अनिश्चित और असुरक्षित माहौल में बालिकाएं अपने अनुभवों से जिस जीवन-दर्शन को सीखती हैं, वह अपमान और खौफ के रूप में उनके व्यक्तित्व और आत्मविश्वास को हमेशा पराजित करता रहता है। समाज की इस भयावह सच्चाई को कहानी यथार्थपूर्ण तरीके से सामने लाती है।''[2]

'कठपुतलियाँ' शीर्षक कहानी स्त्री मन के अंतर्द्वंद को पाठकों के समक्ष रखता है। कहानी जैसलमेर के ग्रामीण परिवेश की है। कहानी मुख्य रूप से तीन पात्रों के इर्द-गिर्द घूमती नजर आती है सुगना, रामकिसन और जोगीन्दर। सुगना को केंद्र में रखकर स्त्री मन, समाज में स्त्री के साथ हो रहे शोषण, बाल-विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा जैसे मुद्दों को लेखिका ने बड़े ही सजीव ढंग से कहनियों का रूप देकर प्रस्तुत किया है। कहानी की मुख्य पात्र 'सुगना' जब अपने प्रेमी द्वारा गर्भवती हो जाती है तब उसे सामाजिक रूढ़ियों का, क्रूरताओं का सामना करना पड़ता है तथा पंचायत में अग्नि परीक्षा देने की नौबत आती है। ऐसी स्थिति में उसका पति रामकिसन उसका साथ देता है। वह उसे बचाने के लिए अपने बेटे द्वारा एक खास तेल भिजवाता है- ''बाई देख न इधर...ये बापू ने भेजा है...तेल है ये...कब्रों पर उगने वाले ग्वारपाठे और रेत की छिपकली का तेल मल ले हाथ पे...हाथ नहीं जलेगा न फफोले होंगे। परसों चार घंटे साइकिल चलाकार सीमा पार के नजदीक डटे हुए गाड़िया लोहारों से लाया है, बापू।''[3] 'अवक्षेप' कहानी आदिवासी छात्रावास को केन्द्रित करती कहानी है। इस कहानी में आदिवासी छात्रों (स्त्री) की कॉलेज और गर्ल्स हॉस्टलों के जीवन पर विश्लेषणात्मक ढंग से रोशनी डाली गयी है। मुख्य रूप से यह कहानी चित्रित करती है आदिवासी छात्रावासों में हो रहे यौन शोषण और भ्रष्टाचार को। उनके लिए सुविधाओं की बाते तो खूब होती है पर लेखिका उस यथार्थ से पाठकों को रु-ब-रु करवाती हैं जहाँ हकीकत कुछ और ही है। लेखिका के शब्दों में- ''इस छात्रावास के कमरे क्या थे, दड़बे ही थे। न जाने कब से पुताई नहीं हुई थी। मैंने बेंच पर बैठे-बैठे कमरों में झाँका, कमोबेश हर कमरे का एक ही-सा परिदृश्य-अलमारियाँ नदारद, बस कुछ ताखें थीं...टेबल नहीं थी, डेस्क थीं, उन पर किताबें थीं। प्रकाश के लिए मकड़ी के जालों से ढका धूमिल बल्ब, काँच की खिड़की बन्द थी। उस पर मोटा काला कागज चिपका था। कैसे पढ़ती होंगी इतनी कम रोशनी में?''[4] मनीषा की कहानियों में मानवीय संवेदना के स्वर भी मुखरित होते है। वे नारी की भावनाओं को बखूबी समझती है। नारी के मन की दशा और नारी जीवन की दिशा का अनुमान लगा पाना हर किसी के वश की बात नहीं होती है। उनकी भावनाओं को समझने के लिए पैनी नजर का होना बहुत जरूरी है। मानव सदैव नारी का शोषण ही करता आया है। कभी घर के अन्दर तो कभी घर के बाहर। आज समाज में जो नारी की स्थिति है वह पहले कभी नहीं थी। आज रात में तो नारी असुरक्षित है ही परन्तु दिन भी सुरक्षित नहीं है। समाज में आज वासना के भेड़िया मुंह उठायें घूम रहे है। उन्हें कोई रोकने और टोकने वाला नहीं है। ऐसी ही कहानी 'बिगड़ैल बच्चे' है। 'बिगड़ैल बच्चे' अपने ढंग की अनूठी कहानी है। जीवन की मार्मिक संवेदनाओं को खुद में समेटे इस कहानी के कई प्रसंग मन को छू जाते हैं। कहानी नयी और पुरानी पीढ़ी के उत्तरदायित्वहीनता का प्रतीकार करते हुए उसे मार्मिक बना देती है। इस कहानी में लेखिका रेलयात्रा के दौरान घटी घटना को कहती हैं। कहानी मुख्य रूप से उन तीन युवाओं की है जो युवा पीढ़ी को लेकर बनी जमाने की नजरिये को बदलकर रख देते हैं। आज की पीढ़ी के पहनावे को लेकर जो विचारधारा पुरानी पीढ़ी के मन में बनी हुई है उसका जिक्र कहानी में कुछ इस प्रकार किया गया है- ''यह हाल है हमारे देश की युवा पीढ़ी का!... हमारी यंग जेनरेशन पूरी की पूरी ही ऐसी है। कुछ वेस्टर्न कल्चर का असर था, बचा-खुचा टी.वी. चैनलों ने पूरा कर दिया। इन लोगों को इतनी छूट है, हमें कभी थी क्या?''[5] आदर्शों और मर्यादाओं की दुहाई देने वाले डॉक्टर दंपति अपनी मजबूरी बताकर घटना को अनदेखा कर देते हैं- ''हिज वाइफ स्कोल्ड हिम नॉट टू कम विद अस ऐंड ही स्टेड बैक। वी लिटरली प्रेड टू हिम... बट ही टोल्ड आय कांट...गेट डाउन...आय हैव टू रीच टुडे।''[6] अतः कहानी के अंत में कहानीकार दिखाती हैं की जो लेखिका शुरू में उनसे चिढ़ी हुई थी वही अब उन्हें उनके गाने सुनने से, साथ बैठने से कोई चिढ़ नहीं हुई। मुख्य रूप से यह कहानी चित्रित करती है की किस प्रकार से हमें अपने नजरियों को बदलने की आवश्यकता है। कहानी में मनीषा कुलश्रेष्ठ यह स्पष्ट करती हैं कि- किसी को उसके पहनावे के आधार पर नहीं परखना चाहिए।

वर्तमान समय समाज में विलुप्त होती लोक-कलाओं का तथा लोक कलाकारों की दयनीय स्थिति की अभिव्यक्ति मनीषा कुलश्रेष्ठ अपनी कहानी 'स्वांग' में करती नजर आती हैं। उत्तर भारत की विलुप्तप्राय बहुरूपिया कला वहाँ के अधिकांश राज्यों के लिए एक अहम हिस्सा हुआ करती थी जो लोगों के लिए मनोरंजन और जीवकोपार्जन की भी साधन हुआ करती थी। आज के समय में लोककलाएं विलुप्त होती जा रही है। वर्तमान समय में लोककलाओं को भुलाया जा रहा है। इस बात की पुष्टि कहानी के मुख्य पात्र 'गफ्फार खाँ' को केन्द्रित कर मनीषा कुलश्रेष्ठ करती हैं। यह कहानी तकनीकी क्रान्ति के नाम पर संवेदना खोते समाज की है। पेंशन और चिकित्सा सहायता के लिए सरकारी अफसरों से मिली निराशा से लौटे गफ्फार खाँ राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त कलाकार हैं। पर आज के तकनीकी युग में लोक कलाओं को कोई महत्व नहीं दिया जाता। कहानी में इस बात की पुष्टि कलक्टर साहब के इस कथन से होती है ''आज के तरक्की पसंद युग में कला के क्या मायने, वह भी राजा-महाराजाओं के जमाने की कलाएँ ! आप ही कहें आपके बच्चों में से कौन-सा आपकी विरासत को आगे बढ़ा रहा है? न सही बच्चा, है आपकी कला का कोई नामलेवा? कोई चेला?''[7] भौतिकवाद के कारण अपनी संस्कृति से आज व्यक्ति किस प्रकार विच्छिन होता जा रहा है उस यथार्थ को 'स्वांग' कहानी के माध्यम से पाठकों के सम्मुख रखा गया है। 'कुरजाँ' कहानी में कुरजाँ मास्टर को बताती है कि ''मास्टर साब हमारे पुरखे धुमन्तू कबीले के थे कभी इस पार तो कभी उस पार न हिन्दू न मुसलमान जान की सांसत लगी रहती थी बॉर्डर के आस-पास रहने में सो एक जगह बसने के इरादे से वो रावले आया था एक हजार का करार था दो साल की बन्धक मजूरी का वो लौटा ही नहीं मैंने अपने पीहर में इस पार ही थी कोसों पैदल चलके जीवंसर आयी उसके इतंजार में तब से यही हूँ।''[8] 'परजीवी' कहानी में पति पत्नी के बीच कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य की इस स्थिति को उभारा गया है। कहानी में पति किसी भी तरह अपने दांपत्य संबंध बचाना चाहता है परन्तु पत्नी की अकर्मठता उसे उससे दूर कर देती है। अपनी स्थिति अभिव्यक्त करते हुए पति कहता है कि ''क्या मिला मुझे दस साल ऐसे दांपत्य में रहकर जिसमें घर लौटकर मिली माडग्रन से त्रस्त माथे पर कपड़ा बांधे बीवी और मैला-कुचैला घर। उसे तो सब्जी-रसोई का सामान तक खरीदने की तमीज न थी वो इस कदर बेशऊर थी कि चूल्हा गंदा पड़ा है ड्रांइगरूम में चप्पलें उतरी हैं जाले लगे हैं, कमोड पीला, सिंक चिपचिपा। वह शहजादी मेरे लौने से पहले तो बॉलकनी में होती गुनगुनाती, कविता लिखती हुई मुझे देखकर विस्तर पर पड़ जाती। थके-मांदे घर लौटकर मुझे ही चाय बनानी पड़ती।''[9]

'फॉस' कहानी कई स्तरों पर विद्रोही स्वर से भरी पड़ी है। मान्यताओं के खिलाफ उसका बाप जो शराबी है और एक दिन शराब के नशे में अपनी बेटी के साथ बलात्कार करता है। जयदीप जो उसके बचपन का दोस्त है, जब वह फौजी बनकर वापस आता है तो यह कहानी गाँव की एक महिला से सुनता है। वह कहती है-''बाईसा, अंतु जीजी रे लारे, मलिक से बैवार ठीक कोनी। दारू रा नसा में वे कई भी कर सके। वगालेहोस कोनी रयो है कि या बेटी

है कि बैण।''[10]

यह कहानी स्त्री की जटिल मुश्किलों और रिश्तों के दबावों एवं दुश्वारियों को व्यक्त करती है। शराबी बाप की मौत पर शवयात्रा में शामिल होकर सनातनी मूल्यों के खिलाफ विद्रोह करती है- ''राम नाम सत्य है कि हल्की-हल्की उदास गूँज के साथ हल्का-सलेटी शलवार कुर्ता पहने, दुपट्टे को कमर में बाँधे अंतिमा अर्थी के आगे पानी भर मटकी लेकर चल रही थी, जिसके तल में से बूँद-बूँद जल टपक रहा था। रास्त भर सारा गाँव उसे हैरत से देखता रहा था।''[11]

'कुछ भी तो रूमानी नहीं' कहानी-संग्रह में 'स्टिकर' शीर्षक से एक ऐसी भी कहानी है जो वर्तमान समय समाज की उपभोक्तावादी-बाजारवादी संस्कृति का यथार्थ चित्रण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। बाजारवादी संस्कृति इस कदर लोगों पर हावी होने लगा है कि व्यक्ति 'मनुष्य' से 'प्रोडक्ट' में परिवर्तित होता चला जा रहा है। इस संस्कृति के अंतर्गत किस प्रकार एक वेटर को 'एंगर मैनेजमेंट' और 'इमोशनल कोशेंट' की ट्रेनिंग दी जाती है जिसे ढ़ोते-ढ़ोते वह एक 'स्टिकर' में तबदील हो जाता है इसका आंकलन लेखिका ने बड़े ही यथार्थ के साथ किया है। कहानी का नायक 'अजय', रेस्तरां में काम करने वाला एक वेटर है। उसे उसके काम के दौरान हिदायत दी जाती है कि- 'मुस्कान के साथ पिजा नहीं, पिजा के साथ मुस्कान सर्व करते हैं।' इस स्लोगन को अवचेतन में दोहराते हुए उसने अपना चेहरा काउंटर के पास लगे वॉशबेसिन के आईने में देखा और चेहरे पर जमती एक नपी-तुली खुशगवार सी मुस्कान चुन ली।"[12] 'मि. वॉलरस' कहानी में पुरुष की लम्पटता व पुरुषवादी सोच का परिचय मिलता है। मि. वालिया शादीशुदा है उसके बावजूद वह एक लड़की से प्रेम संबंध स्थापित करता है। उससे शारीरिक संबंध बनाकर उसे कुँवारी माँ बना देता है। इस बच्चे के कारण मि. वालिया और उनके बीच कहा सुनी हो जाती है। वह लडकी अपने बच्चे को लेकर मि. वालिया के घर जाती है और तीनों में बहस हो जाती है ''हाँ मेरा है बच्चा। फिर भी तुम्हें उसे घर बुलाकर चाँटा नहीं मारना चाहिए था।''[13]

'कठपुतलियाँ' कहानी में माँपुत्री संबंध में अजनबीपन या परायापन देखने को मिलता है। सुगना की माँ उसकी शादी विधुर रामकिसन से करवा देती है। सुगना के बापू के मरने के दो साल में ही ''उसकी बाई खुद जाके, पास के गाँव के एक खेती किसानी वाले दूसरी जात आदमी के घर नाते बैठ गयी थी और अपने सम्बन्ध की जल्दी में सुगना का गौना पन्द्रह साल की होने से पहले ही कर दिया।''[14]

'ब्लैक होल्स' कहानी में एक पुत्री के लिए चिन्तित पिता की अभिव्यक्ति है। इस कहानी का पिता अपनी पुत्री से बहुत अधिक स्नेह रखता है। पिता अधिकारिक बोधक होने के कारण उसे हर बुरी नजर से बचाना चाहता है। कुछ गलत करने पर पिता यदि अपनी पुत्री को डांटता या मारता है तो उस पर अपना प्यार भी न्यौछावर करता है। इस कहानी का पिता अपनी पुत्री अनिंधा की किसी बात पर उसे थप्पड मार देते हैं परन्तु बाद में पिता उदास हो जाता है। कहानी की इन पंक्तियों के माध्यम से पिता-पुत्री के बीच स्नेह का बोध होता है। ''थप्पड जोर का था उँगलियाँ छप गई और उसे बुखार आ गया।मैं रात भर उसे गोद में लिए रहा मेरी पत्नी समझाती रही।''[15]

अत: निष्कर्ष के रूप में इन कहानियों को देखकर कहा जा सकता है कि मनीषा कुलश्रेष्ठ अपनी कहानियों के विषयों में विविधता रखती हैं। वर्तमान समय समाज में व्याप्त विसंगतियां, विडंबनायें, स्त्री जीवन की त्रासदी आदि इनके साहित्य में परिलक्षित होते हैं। स्त्री मन का उदारीकरण, पुरुष सत्ता का हावी होना उनकी कहानियों का विषय वैविध्य में से एक है।

REFERENCES

1. मनीषा कुलश्रेष्ठ, कठपुतलियाँ, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, तीसरा संस्करण, 2010, पृ. 23, 23
2. https://samalochan.blogspot.com/2018/04/blog-post.html?m=1
3. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'कठपुतलियाँ, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, तीसरा संस्करण, 2010, पृ. 20
4. वही, पृ. 91
5. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'गंधर्व-गाथा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2016, पृ. 120
6. वही, पृ. 126
7. वही, पृ. 13
8. मनीषा कुलश्रेष्ठ, केयर ऑफ स्वात घाटी, बोधी प्रकाशन, जयपुर, सं. 2012 पृ. 10
9. मनीषा कुलश्रेष्ठ, बौनी होती परछाई, मेघा प्रकाशन, सं. 2003 पृ. 53
10. संपादक शैलेन्द्र सागर, रजनी गुप्त, मुस्कुराती औरतें, कहानी इस जहाँ में हम, अल्पना मिश्र, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली, सं. 2008, पृ. 141
11. वही, पृ. 144
12. मनीषा कुलश्रेष्ठ, 'कुछ भी तो रूमानी नहीं', अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, पहला संस्करण 2008, पृ. 106
13. मनीषा कुलश्रेष्ठ, कठपुतलियाँ, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, तीसरा संस्करण, 2010, पृ. 108
14. मनीषा कुलश्रेष्ठ, गंधर्व गाथा, सामयिक प्रकाशन नई दिलली, सं. 2012 पृ. 108
15. मनीषा कुलश्रेष्ठ, किरदार, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, सं. 2018 पृ. 56